DATE: / / PAGE NO. B+

भाषा शैली:— ध्रुवस्वामिनी नाटक की भाषा अपने युग के पूर्णतः अनुरूप है। प्रसाद जी की भाषा ध्रुवस्वामिनी में संस्कृतनिष्ठ तत्सम पूर्ण है, फिर भी उसके अन्य नाटकों की अपेक्षा वह कहीं अधिक व्यवहारिक है। भाषा शैली मुख्यतः काव्यतत्व प्रधान है। शैली की अलंकरण संस्कृतगर्भित रूप और मधुवेष्टन से उसे बड़ा गद्य और समृद्ध रूप प्रदान किया है। छोटे-२ भाव खंडों को सजा कर उसमें कला का अन्यतम रस भर देना इस शैली की मुख्य वृत्ति है संगीत और काव्य के समस्त तत्वों को समेटा गया है।

रस योजना :→ इस योजना की दृष्टि से भी ध्रुवस्वामिनी बड़ी सफल रचना है। वीर और श्रृंगार रस की बड़ी ही सफल अभिव्यक्ति इस नाटक में हुई है साथ ही हास्य रस के मनोरंजक प्रसंगों ने नाटक को बड़ा मनोरम और आकर्षक रूप प्रदान किया है।

गीत योजना :→ प्रसाद जी पहले कवि हैं बाद में नाटककार उनके नाटकों काव्य की गहरी अन्तर्धारा प्रवाहित हुई है।

अभिनेयता :→ ध्रुवस्वामिनी नाटक की महान विशेषता उसका अभिनय होना है अपने लघु आकार और रंगमंच के अनुरूपों की योजना में ध्रुवस्वामिनी नाटक पूर्णतः अभिनय योग्य है।

Premium
01-04-20 08:11

DATE: / /
PAGE NO.

ध्रुवस्वामिनी में प्रयुक्त संवादों से पात्रों की मनोवृत्तियाँ भी स्पष्ट हो जाती हैं और संवादों में पात्रानुकूल मनोवैज्ञानिकता भी है। कहीं-2 संवादों में विचारों की गम्भीरता भी परिलक्षित होती है। रामगुप्त और शिखर स्वामी के संवाद प्राय: व्यंग्य से प्रेरित हैं कुछ संवाद हास्य से परिपूर्ण और कुछ तीव्र संवेग हैं

देशकाल और वातावरण :→ प्रसाद जी ने अपने इस ऐतिहासिक नाटक में देशकाल वातावरण योजना के नाटकीय तत्व का ~~सफलता~~ सफलतापूर्वक समावेश किया है। इस कसौटी पर उनका नाटक खरा उतरता है नाटक को पढ़कर या देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम भारतीय इतिहास के उस काल में विचर रहे हैं जिसका नाटक में चित्रण किया गया ~~है नाटक की कथावस्तु~~ जिसका चित्रण नाटक में किया गया है नाटक की कथावस्तु उसके दृश्य नाटक के पात्र, उनकी बोली, उनकी वेशभूषा इन सब बातों लेकर हम उस युग का वातावरण ही अपने चारों ओर पाते हैं। नाटक के सभी दृश्य उस युग के वातावरण और सांस्कृतिक, सामाजिक राजनैतिक अवस्था के चित्रों को बड़े स्वाभाविक रूप में हमारे सम्मुख रखते हैं। यह सत्य है कि नाटककार ने पात्रों की वेशभूषा रंगमंच की साज सज्जा को लेकर अपने और और ओर से कोई रंग संकेत नहीं दिए फिर भी पाठक उसका अनुमान सहज ही लगा सकता है।

01-04-20 08:11

कथन सभी कुछ ऐतिहासिक व्यक्तित्व और चरित्र के अनुरूप है। पात्र योजना और चरित्र-चित्रण पर नाटककार की आदर्शवादिता की गहरी छाप है।

पात्रों का चरित्र आन्तरिक द्वन्द भी लिये हुये है नाटक सभी पात्रों के हृदय में द्वन्द है। ध्रुव-स्वामिनी रामगुप्त, चन्द्रगुप्त, कोमा सभी आन्तरिक संघर्ष लिये हैं पात्रों के हृदय का यह अन्तर्द्वन्द, बहिर्द्वन्द को जन्म देता है और स्वयं भी नाटक की संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से प्रभावित होता है। परिस्थितियों के इन घात प्रतिघातों के बीच पात्रों के बीच पात्रों के चरित्र का विकास होता है और साथ ही नाटकीय गति में तीव्रता और आकर्षण का समावेश भी इसमें सन्देह नहीं की ध्रुवस्वामिनी नाटक रूप में बहुत उच्च कलात्मक धरातल पर स्थित है।

कथोपकथन या संवाद :→ संवाद ही नाटक का मूलआधार है। ध्रुवस्वा के संवाद संक्षिप्त एवं सरल है। कहीं-2 एक एक दो पंक्तियों के वार्तालाप संवाद सौष्ठव उत्प करने में सफल रहे हैं देखिये :—

ध्रुवस्वामिनी — तुम लोग कौन हो?
कोमा — मैं पराजित शक जाति की एक बालि
ध्रुवस्वामिनी — और ?
कोमा — और मैंने प्रेम किया था
ध्रुवस्वामिनी — इस घोर अपराध का दण्ड क
कोमा — वही जो स्त्रियों को प्राय! मिला कर
निष्पीड़न और उपहास ! रानी मैं तु
भीख मांगने आयी हूँ।

01-04-20 08:11

DATE: / /
PAGE NO. B+

प्रश्न→ नाटकीय तत्वों के आधार पर ध्रुवस्वामिनी का मूल्यांकन किजिए ?

अथवा

ध्रुवस्वामिनी की साहित्यिक समीक्षा कीजिये ?

उत्तर= भूमिका → प्रसाद जी को भारतीय संस्कृति से अगाध प्रेम था परिणाम स्वरूप उनकी दृष्टि भारत के अतीत पर गयी और वे उसके गायक बन बैठे। भारतीय उच्चादर्शों एवं भारतीय संस्कृति के प्रकाशन के लिए उन्हे नाटक सर्वाधिक श्रेष्ठ साधन प्रतीत हुए। ध्रुवस्वामिनी की साहित्यिक विशेषताओं को निम्न रूपों में देखा जा सकता है —

कथानक :→ ध्रुवस्वामिनी का कथानक अति प्राचीन है जिसमें इतिहास और कल्पना का अनुपम संयोग हुआ है। नाटक की कथा का आरम्भ रामगुप्त के शिविर से होता है जहाँ ध्रुवस्वामिनी एक प्रकार से वेदनापूर्ण जीवन यापन करती है। नाटक में ध्रुवस्वामिनी रामगुप्त और चन्द्रगुप्त की कथा अधिकारिक है। कोमा और शकराज के प्रणय प्रसंगों को प्रासंगिक कथा के रूप में देखा जा सकता है। ध्रुवस्वामिनी सम्राट समुद्रगुप्त की पुत्रवधु होने पर वह उपेक्षित है जीवन और नारी जीवन के सुखों से वंचित है कारण उसका पति नाम धारी क्लीव रामगुप्त, क्लीव मद्यप (शराबी) एवं कुल कलंकी है। वह शकराज से युद्ध न करके बौनो, हिजड़ो, कुबड़ो और सुन्दरियों के मध्य ऐश आराम करता है। और शकराज से सन्धि करने के लिए अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को शकराज के हाथों में समर्पण करने को उद्यत हो जाता है चन्द्रगुप्त कलंक सागर में गुप्त कुल यश को निमग्न

Premium

01-04-20 08:10

होते देख स्त्री वेश में ध्रुवस्वामिनी के साथ शकराज के पास आता है। और इसका वध करता है। ध्रुवस्वामिनी की ओजस्विता से प्रभावित होकर सामन्त वर्ग रामगुप्त का विरोध करते हैं। परिणाम स्वरूप एक सामन्त रामगुप्त का हत्या कर देता है। पुरोहित शास्त्र-विधि सम्मति से विधवा ध्रुवस्वामिनी महादेवी बनती है। यह कथा ध्रुवस्वामिनी के तीन अंको में विभुक्त किया गया है। यह कथा सूक्ष्म प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक है। ध्रुवस्वामिनी की इस मूल कथा के साथ ही बौने हिजड़े, कोमा के प्रसंग भी आते हैं। कथानक की दृष्टि से ध्रुवस्वामिनी पूर्ण सफल नाट्यकृति है कथा के भीतर से चरित्र रूप रेखा उभारने और नाटकीयता का समावेश करने में प्रसाद जी नितान्त सफल हुये हैं।

पात्र :→ ध्रुवस्वामिनी के प्राय सभी पात्र सांसारिक हैं प्रसाद जी में पात्रों में प्राण फूँक देने वाली प्रतिभा की सजीवता अद्वितीय थी। प्रसाद जी ने अपने पात्रों के मनोगत भावों एवं उनके द्वन्दों का मार्मिक चित्रण किया है। प्रमुख पुरुष पात्र रामगुप्त, चन्द्रगुप्त, शकराज, शिखर स्वामी हैं। नारी पात्र केवल तीन हैं- ध्रुवस्वामिनी, कोमा, मन्दाकिनी। अपने इन पात्रों की चरित्र की अवतारणा नाटककार ने पूर्णतः ऐतिहासिक और सामाजिक अनुरूपता के आधार पर की है। जिसकाल से उनका चयन किया गया है इसकी राजनैतिक सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना प्रतिनिधित्व करने में पूर्ण सफल है पात्रों का आचरण मनोभावनाएँ, चितवृत्तियाँ, कार्य व्यापार, वेशभूषा, चाल-ढाल संम्वाद और उनके सम्बन्ध में अन्य पात्रों के कथन अन्य पात्रों के सम्बन्ध में उनके

01-04-20 08:10

DATE: / / B+
PAGE NO.

निष्कर्ष :→ इस प्रकार ध्रुवस्वामिनी नाटक अपनी ~~हिन्दी~~ इन्हीं विशेषताओं के कारण हिन्दी के ऐतिहासिक नाट्य साहित्य में बड़ा गौरवपूर्ण स्थान लिये हुये है। कथावस्तु चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, भाषाशैली, देशकाल, वातावरण, उद्देश्य, रस योजना, गीतयोजना, अभिनेयता आदि नाट्यकला के जितने तत्व है उन सबका निर्वाह बड़ी सफलता से नाटक में हुआ है।

01-04-20 08:12